सोंहाँत-अनसोंहाँत

सोंहाँत-अनसोंहाँत

डॉ. शिव कुमार प्रसाद

पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

ISBN : 978-93-87675-72-8

Published by **:** Pallavi Parkashan
Tulsi Bhawan, J.L.Nehru Marg, Ward No. 06, Nirmali, District- Supaul, Bihar **:** 847452
website **:** http://pallavipublication.blogspot.com
e-mail **:** pallavi.publication.nirmali@gmail.com
Mobile **:** 8539043668, 9931654742

Price 175/-
Copyright © Author
First published 2018

Typeset and Printed By **:** Manav Arts, Nirmali (Supaul). Pin **:** 847452

SOHANT-ANSOHANT
Anthology of Maithili Poems by Dr. Sheo Kumar Prasad

All rights reserved. No Part of this publication may be reproductd or transmitted, in any form or by any means, without prior permission of the author.

समर्पित अछि ई पोथी श्रद्धेय बड़का बाबू, छोटकाबाबू, ननुकक्का, छोटका काका, बुढ़िया माए, माए, लवकी काकी, बड़की भौजी, लालभौजी आ सुकदेव भैयाकेँ... जनिक सिनेह आब कखनो नहि, कतहु नहि, कहियो नहि... ।

अहीं सबहक सिखाओल बोलक सम्पैतसँ आइ हम एहि पोथीकेँ पूरा कएल ।

तँए ई पोथी अहीं सबहक लेल

विमल

(शिव कुमार प्रसाद)

पोथीक मादे

एहि संग्रहमे नहुँ-नहुँ सुनगल विविध भावकेँ हम शब्दरूप देबाक प्रयास केलहुँ अछि। अनेक काव्यगोष्ठी आ मुख पोथीपर देल लगभग तीन-चारि बर्खक भावान्तरक ई कविता संग्रह थिक।

भाव किनकहुँ मरौसी नहि तँए जखन जे 'सोंहॉत वा अनसोंहाँत' लागल, लिखैत गेलहुँ। मोटा-मोटी बरख भरिसँ टंकित ई रचना सभ पलखैतक कारणें प्रकाशनक बाटपर रहितो बिलमल छल।

एहि संग्रहमे किछु चरिपतिया सेहो छेलइ। ओकर फराक संग्रह बनेबाक इच्छाक कारणें किछु नव-पुरान रचना दऽ प्रस्तुत संग्रहकेँ पूर्ण कएल।

संग्रह नीक कि अधला आकि तीत कि मीठ जेहेन हो, आह-वाह वा आह-वाहक संस्कृतिसँ फराक समीक्षाक आकांक्षी अछि।

-डॉ. शिव कुमार प्रसाद

निर्मली

31 जनवरी 2018

आभार

अदखै-बदखैसँ लऽ कऽ शुभकामनाकांक्षी समस्त इष्ट-मित्रक आभारी छी, जिनकर चोट आ शुभेच्छाक कारणें ई संग्रह प्रकाशित भऽ रहल अछि।

'सगर राति दीप जरय'क अनेक वरिष्ठ-कनिष्ठ समीक्षक आ रचनाकारक प्रोत्साहनक स्मरण करैत हुनका सबहक प्रति आभार प्रकट करैत छी।

अपन अग्रज द्वय श्रीयुत् महावीर प्रसाद एवम् सुखदेव प्रसादकेँ सादर स्मरण करैत छी जिनकर सदैत प्रोत्साहन, सिनेह आ आशीष भेट रहल अछि।

एहि अवसरपर श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीकेँ स्मरण कोना नहि करबनि, हुनकर प्रोत्साहन सदैत मैथिली भाषामे रचना करबा लेल हमर प्रेरणा श्रोतक काज कऽ रहल अछि।

एहि पोथीक प्रकाशनक क्रममे सभसँ अधिक सिनेही उमेश मण्डल, हुनक धर्म पत्नी पुनम मण्डल संगे पल्लो, लल्ला आ मानव केर संग भेटल अछि। समस्त परिवारकेँ बहुत-बहुत सिनेह आ आशीष।

शिव कुमार

काव्य-क्रम

प्राकथन	15
मिथिला धाम	16
तँए किछु ने किछु लिखैत जाउ	17
निर्मलीक निर्मलतामे	18
बौआक उबटन	20
शहर ओ गेल	22
साँझ	24
ढोलक बोखार	26
खेबैया	27
माय हमर नव-कुम्भ नहेली	28
छठि पाबैन	30
भुमकम	32
दीप	34
मन पछताय	36
सभ झूठ-फूसमे बाझल छी	38
देख एलौं हम पटना	40
नेह	42
किनको क्यो नहि भेल	43
पियास	44
अत्मा केर छोलिका	45

ओझराहैट 47
आश विहीन हास विहीन 48
कुदीन 49
जनमलकेँ नहि समटल 50
ठनकल फेर ठनका 51
विरान 52
मन नहि लगैत अछि 53
सुमीता 54
अनसोंहाँत 55
फगुआ 56
फागुन 57
मनोरथ 58
वेलेनटाईनक बात 59
बसंत 60
बसंती भोर 61
कर्मक बाट 62
बिसबास 63
थकावैट 64
गुलाब 65
अपन 66
अगहन पूष 67
जुआनिक बोखार 68
भोग 69

जाड़	70
कनकनी	71
रिजल्ट	72
जिनगीक झमेला	73
गाम छूटल	74
छितिर-बितिर	75
जातिक छाऊर	76
ईहो तँ जिनगीए छै	77
गामक बात	78
बौआइत	80
झूठ	82
भातक थारी	83
मधुर प्रात	84
जुग-पुरुष	85
दीप	87
मैथिल	88
छोटकी-बड़की	89
घाघस	90
परम्परा	91
राग	92
विद्याक अर्थी	93
हर्षित फुलकित प्राण	94
गाछ	96

गाए आ गंगा	97
मनक बात	98
पुम्ही	99
खेतिहर	100
मृदुल थाप	101
डौंस बहुत	102
अतमा बैमान छै	103
हेहरा	104
बाबाक गाम	106
मनक गगन	108
नोर	109
सुरभित आनन	110
संतोष	111
तमसो मा ज्योर्तिगमय	112
अवस्था	113
चोरबा सभकिछु लऽ गेल	114
बेगरता	116
साखी- 1	117
साखी- 2	118
साखी- 3	119

प्राकथन

काँट आ फूल हमर जिनगीक सहोदर अछि।
उपेक्षा-अपेक्षा अछि सहचर
सत्य दिस आकर्षण
असत्यसँ विकर्षण
मनमे
सदैत बनल रहैत अछि।

विविध कला आ सौन्दर्य
हमर आकर्षण केर केन्द्र बिन्दु अछि।
हम स्वीकार करैत छी। ❑

मिथिला धाम

अपन गाछक छाहमे
अपन मिथिला धाममे
अपनहि माटिपर बैठल छी
अपन सिमरा गाममे।

मधुर लगए अछि अझुका रौद
पछबा बहै झिहिर झिहिर
लुक्खी मेना कचबचिया सभ
संगहि अछि आई गाममे।

पौरकी सेहो देखल आइ
बहुत दिनपर सीसो तर
काज करै छी कैव करै छी
स्वर्गसँ सुन्नर गाममे।
अपन मिथिला धाममे। ❑

तँए किछु ने किछु लिखैत जाउ

लिखैत-लिखैत किछु लिखिये देबै
मैथिलीक उपकारी हेबै
तैं किछु-ने-किछु लिखैत जउ।

छपैत-छपैत छैपिये जेबै
एकदिन लेखक बनिए जेबै
मंच आर इनामो भेटत
तैं किछु-ने-किछु लिखते जाउ।

मौलिकता केकरा कहैत छी
किनकामे मौलिकता छनि
सभ कियो एक्के बात लिखै छथि
सबहक नीयत साफ देखाइत अछि
तैं किछु-ने-किछु लिखते जाउ।

नीर-क्षीर विवेक किनका छन्हि
लिखनिहारमे हंसत्व किनका छनि
पूर्जा-पूर्जी जोड़ि-तोड़ि कऽ
किछु-ने-किछु अहाँ घँसैत जाउ
तैं किछु-ने-किछु लिखैत जाउ। ❑

निर्मलीक निर्मलतामे

निर्मलीक निर्मलतामे
मनक मलाल सभ मेटा रहल अछि
शिक्षाक ऐ महापंकमे
गामक जिनगी लेटा रहल अछि।

टाका-कैंचा जोरि-जोरि कऽ
माए-बाप सभ पठा रहल अछि
कोचिंग, विद्यालय, कौलेजमे
एक-एक जन लुटा रहल अछि।
शिक्षाक एहि महापंक...।

के पढ़ौते केकरा लग जा कऽ
नेना भुटका पढ़ि रहल अछि
नै सुधि बुधि ई केकरो छनि
अपने झंझट ओझराएल अछि।
शिक्षाक एहि महापंक...।

चटिया सभ चटिसारक लाथे
गुरुजी पायबटोरक बाटे

अपन-अपन भाँजमे सभकोइ
डरीर छुबए लेल अपसियाँत अछि
शिक्षाक एहि महापंकमे
गामक जिगनी लेटा रहल अछि। ❑

बौआक उबटन

कजरौटी केर काजर संगे
बौआ केर उबटन बिला गेल।
सोइरी केर अशौचक संगे
मिथिलाक संस्कार हेरा गेल।
कजरौटी केर...।

नव युगक नव संस्कारमे
जॉनसन बेबीक पाउडर मिलि गेल
माइक स्तन छोड़ि कऽ नेना
बोतल संगे माए भुला गेल।
कजरौटी केर...।

सिनेहक डोरि तोड़ि कऽ ममता
सुन्दरता केर मोल बिका गेल
दाइ नौरिनक संग पाबि कऽ
नेना माइक नेह भुला गेल
कजरौटी केर...।

अपन आन सभ पाइपर बिक गेल
सम्बन्धक सभ आँच बुता गेल

धन लक्ष्मीक चकाचौंधमे
तन मन रागक रंग मेटा गेल
कजरौटी केर...।

सोहर जनम बधैया संगे
मूड़न उपनैनक महत मेटा गेल
लकदक गाड़ी वस्त्राभूषण संग
बरूआ केर आचार्य भुला गेल
कजरौटी केर काजर संगे
बौआ केर उबटन बिला गेल। ❑

शहर ओ गेल

शहर ओ गेल मनुक्ख बनए लेल
गाममे रहि बन-मानुख छल
शहरक पाथर केर जंगलमे
ऊहो आबि आइ पथरा गेल।
शहरक पाथर केर...।

गाममे छल भाए-बहिन सभ
कियो बाबू कियो काका छल
भैया-भौजी बेटी-भतीजी
नै कियो बिनु नाता छल।
शहरमे जाइते रिश्ता-नाता
सभटा मटिया-मेट भऽ गेल
शहरक पाथर केर....।

पथराएल शहरी पाथरमे
कनिको मानवता नै बाँचल
चारि बर्खसँ चालीस बर्ख केर
बुच्ची, जननी बलि चढ़ि गेल
शहरक पाथर केर...।

बाट-बटोही देखतो आन्हर
सुनितो रूदन बहिर भऽ गेल
पशुतो एहेन कुकर्म सुनि-सुनि
चुड़क पानिमे डुमि मरि गेल
शहरक पाथर केर जंगलमे
सभकेँ सभ आइ पथरा गेल। ❑

साँझ

साँझक संगे भागि रहल अछि
चिड़ै-चुनमुन बाँसपर
बरद-गाए केर जेबर तहिना
दौड़ि रहल अछि बाटपर।

गौधूलिसँ पाटि रहल छै
नभ-ऑगन घर-गामकेँ
बछा-बाछी चिकरि रहल छै
टोलक-टोल बथानपर।

सुरुज सिनुरिया अलोपित भेल
धूरा केर एहि मेघमे
बेटी-बहुरिया दीप नेसने
साँझ देथि ऑगन-दुआरपर।

बाट-बटोहिक डेग भेल नमहर
गाछी-बिरछी भेलै भियौन
नेना-भुटकाक दीठि उतारथि
दाइ-माइ ओसारपर।

आ गइ निनिया बाट तकैत छौ
हमर बौआ ओछैनपर
कथा-पिहानी घुमि रहल छै
बौआ केर लिलारपर। ❑

ढोलक बोखार

सुनलक ढोलिया टिक भेल ठाढ़
गुणमन्ती भेल गामक भार
गाम-गाममे गुणमन्तीकेँ
छुटि रहल अछि आब बोखार
सुनलक ढोलिया...।

अगड़ा-पिछड़ा फेंटम-फेंट
बाप-दइयासँ होइ छै भेँट
पॉच बर्खसँ नीनक मातल
घुमि रहल कुरयाबैत पेट
कोना हएत आब नैया पार
सुनलक ढोलिया...।

दूरक ढोल सोहनगर छेलै
लगक ढोल छेलै भेल बेकार
दंगलक डगर सुनिते मातर
गुणमन्तीकेँ चढ़ल बोखार
सुनलक ढोलिया टिक भेल ठाढ़। ❑

खेबैया

सबहक नाहकेँ भेटल खेबैया
बिनु खेबैया हमरे नाह अछि
देखू पार आब केना लगैत अछि
बिनु खेबैया हमरे नाह अछि।

किनको टाका पार लगौतन्हि
किनको नेता पार लगौतन्हि
अपन-अपन बाँस भिरौने
बहुतो पार उतरलौ जाइ छथि
बिनु खेबैया हमरे नाह अछि।

दूर-दूर धरि नजरि खिरौने
ताकि रहल छी आँकि रहल छी
किनका पछुऔने पार लगत आव
कियो संगी नै भेटि रहल अछि
बिनु खेबैया हमरे नाह अछि।

किनको बड़का पैघ हबेली
किनको बड़का पागक डौड़ही
किनको सार किनको छनि साढ़ू
धोती जिनक अकास सुखाइत अछि
बिनु खेबैया हमरे नाह अछि। ❑

माय हमर नव-कुम्भ नहेली

माय हमर नव कुम्भ नहेली
नै हुनका मन पापक गेठरी
नै हुनका मन बाँझक धोकरी
नेना-भुटुकाक साँस हास संग
जिनगी भरि ओ खूब नहेली
माय हमर नव कुम्भ नहेली।

नै कहियो ओ चानन केली
नै कहियो संन्यासिन भेली
गिरहस्थीकें स्वर्ग बूझि ओ
कर्मक संग प्रभु कें गुण गेली
माय हमर नव कुम्भ नहेली।

नै ओ विदुषी नै ओ सुन्नरि
नै आडम्बरी नै कनसोही
बाट-बटोही सभ जन हिनका
मनुक्ख रूपमे भेटल सिनेही
माय हमर नव कुम्भ नहेली।

मनक प्रयागमे त्रिविध तापकेँ
कर्मक हुलासमे अपन गर्वकेँ
अपन मनोरथ परक सुख लेल
आजीवन ओ डुमौने रहली
माय हमर नव कुम्भ नहेली। ❑

छठि पाबैन

सबहक केरा सबहक नारियल
सबहक ठकुआ एक्केरंग
सबहक मनमे भक्ति-भावना
ठकुए सन छै एक्केरंग
सबहक ठकुआ एक्केरंग।

बाँसक पथिया बाँसक कोनिया
माटिक दिया एक्केरंग
मोट हौउ वा हौउ ओ पातर
सबहक मुड़ै एक्केरंग
सबहक ठकुआ...।

अल्हुआ-सुथनी, हरदी-आदी
सेब-समतोला एक्केरंग
नवका साड़ी नवका धोती
भुवन भाष्कर एक्केरंग
सबहक ठकुआ...।

पोखरि हो कि कछेर धार केर
आँगनक पोखरि एक्केरंग
सभठाम पानिमे ठाढ पबनैतिन
सबहक व्रत छन्हि एक्केरंग
सबहक ठकुआ...।

सबहक अँगना गोबरे नीपल
नेना-भुटका एक्केरंग
सभकेँ छठि परमेशरी देथिन
अभिलाषित वर एक्केरंग
सबहक ठकुआ एक्केरंग। ❑

भुमकम

चारि दिवस ओ सगर यामिनी
नीनक मातल भेल हताश
किनकहुँ कतहु त्रास भेटए नहि
भुमकम भेल गरदनिक फाँस।

कोना जीयब?
की करत विधाता?
ज्ञान-विज्ञान सभ भेल अथाह
दरकल भीत भियौन लगैत अछि
घरो बाँचक नहि अछि आश
भुमकम भेल...।

किनको छुटल प्राण
क्यो बाँचल
क्यो-क्यो दुखे भेल बताह
मनक बेथा किनकासँ बाँटी
घरक-घर भऽ गेलै नाश
भुमकम भेल...।

धरतीक संग थरथर काँपइ
गाछ-बिरीछ संग मानव जाति
की हम केलहुँ की हम पेलहुँ
किनको नहि बुझबाक अवकाश
भुमकम भेल...।

दू-चारिक बात रहल नहि
हजारक-हजारकेँ लऽ गेल काल
केतबो क्यो कलोल कए थाकल
बैठला थाकि-हारि-कऽ आश
भुमकम भेल...।

पाथरक नव जंगल बनाओल
जानक ग्राहक ओ बनि गेल
सर-सम्पैत संग छीनि कए लऽ गेल
जीवनक सभटा हास-विलास
भुमकम भेल गरदनिक फाँस। ❑

दीप

सगर राति हम दीप जरेलौं
तैयो घर अन्हारे अछि
राति-राति भरि दिनक आशमे
मन हमर ओझड़ाएले अछि
तैयो घर अन्हारे अछि।

तमसो मा ज्योर्तिगमय केर
पाठ सभ नित्य दोहराबैत अछि
तैयो नित्य इजोतक चाहमे
एखनो सभ अन्हाराएल अछि
तैयो घर अन्हारे अछि।

मैथिली संगे मिथिला जीतल
देशक भाषामे नाम जुड़ल
भाषा केर सम्मानो बढ़ने
सबहक ऑखि किए मुनल अछि
तैयो घर अन्हारे अछि।

भाषा ओ साहित्यकेँ जे जन
आगू आइ बढ़ाबै छथि
हमरा बुझने वएह छथि मैथिल
हुनके नाम आइ गाबक अछि

राति-राति भरि दिनक आशमे
मन हमर ओझड़ाएल अछि
सगर राति हम दिन जरेलौं
तैयो घर अन्हारे अछि। ❑

मन पछताय

कन-कन माटि कन-कन देह
कन-कन पानि कनकन छै खेत
अगली-बगली खेत पाटि गेल
ऊँचका पाटी भेल बलाय
की करी नै करी मन पछताय।

हाथ-पएर केर ऑगुर ठिठुरल
छिपली मानए नहि ऑगुरक बात
खेतक आड़िपर राखल जलखै
कौआ अलगे खेल-खेलाय
की करी नै करी मन पछताय।

धानक बुट्टी जरि गेल भोरे
आगि-छय केर कोन उपाय
बिनु पटौने खेत छोड़ि कऽ
आगिक भॉजमे कतए जाय
की करी नै करी मन पछताय।

बड़ झंझटिया खेती-बाड़ी
गहुमक खेती बड़ दुखदाय
जाड़ै-जनमए जाड़े बाढ़य
जाड़े मे ओ फरए-फुलाए
की करी नै करी मन पछताय।

जाड़े-जड़ेलहुँ खेत भेल हरियर
धरती भेली परम सहाय
पछबासँ जँ बाँचि गेल तँ
सभटा मेहनत जाएत भुलाय
की करी नै करी मन पछताय। ❑

सभ झूठ-फूसमे बाझल छी

सभ झूठ-फूसमे बाझल छी
कियो अपन डीह नहि ताकै छी।

अपन चास-बास छोड़ि सभ
अनकर चास सम्हारै छी
अपन गाम सुनसान लगैत अछि
अनकर गाम बसाबै छी
सभ झूठ-फूसमे...।

अपन सहोदर दुआरपर अँटकल
दोसर सहोदर ताकै छी
गाम-गाम केर एक्के खिस्सा
दुआरो दीप नहि बारै छी
सभ झूठ-फूसमे...।

भाषा भेष बदैल रहल छै
नित-नित नूतन मिथिला केर
अपन भाषा बिसैर रहल छी

आने भाषापर आश्रित छी
सभ झूठ-फूसमे...।

हाकिम, अमला मील मजूर बनि
जीबू जेतए जे काज मिलए
अपन भूमि-भाषा नहि बिसरी
मिथिले केर अहाँ बेटा छी
सभ झूठ-फूसमे बाझल छी। ❑

देख एलौं हम पटना

हलसल-फुलसल बसमे बैस कऽ
पहुँचि गेलौं हम पटना
देख एलौं हम पटना।

भरि रस्ता हम उड़िते गेलौं
रातिक नीन भेल सपना
केतबो गुहारि देव-गोसाओनकेँ
मन पड़ैत छल फेकना
देख एलौं हम पटना।

बाप जनम नै देखने छलौं
एहेन मनुक्खक जंगल
भोजे बेरमे पहुँचि गेल
ओ पपिआहा घर-घुसना
देख एलौं हम पटना।

चोर-उच्चका डेग-डेगपर
भीड़ देखि कऽ जी उड़ैत छल
बाहर-भीतर जाएब कठिन छल
बेथाक नाओं अछि पटना
देख एलौं हम पटना।

हुनकर बात काटि हम एलौं
बाल-बोधकेँ छोड़ि कऽ एलौं
नेताजी की बात बनौता
मोन रहत ई घटना
देख एलौं हम पटना।

मन होइत अछि उड़ि कखन हम पहुँची
अपन सोहागक अँगना
मेटा रहल अछि झँपा रहल अछि
अपन हुलासक सपना
देख एलौं हम पटना। ❑

नेह

भोरे भोर जँ आगि उठैत छै कोना मेटत बिनु पानिक मेह
कोना कतहु प्रेम उपजतै किनका लग भेटत ओ नेह।

जिनगी भरि सिनेहक आसे गाछे गाछ घुमि एलहुँ
एक-आधकेँ छोड़ि जँ पूछी बाँझे बाँझ बौएलहुँ।

निर्मल मनकेँ निर्मल एना ओहिमे रूप सलोना
ओहि रूपकेँ पागल सुगना ताकए कोना कोना। ❑

किनको क्यो नहि भेल

माया-मोह ममतामे फॉसल
जिनगी रहल हेराएल
नीत-अनीत ने मानल कहियो
ताहुसँ तोष नहि भेल।
जगतमे किनको कियो नहि भेल।

जिनगिक जोंक सदैत लेहु पीलक
दिन दिन मोटगर भेल
देह सुखाएल पएर निह तागैत
किनको कहल नहि गेल
जगत मे किनको...।

नैन रहैत देखल नहि किछुओ
श्रुतिपथ करए ने काम
चर्म रुधिर करए मनमानी
कर्मे बैरी भेल
जगतमे किनको कियो नहि भेल। ❑

पियास

अपनहि मने
धार उपछै छी
कखनहुँ उड़ी अकाश
ताल तलैया
जंगल पर्वत
उड़ी पवनकेँ लाथ
सगर जनम औनाएते बित गेल
तैयो ने मुइल पियास। ❑

अत्मा केर छोलिका

छिलैत अछि सभ दिन
अत्मा केर छोलिका
राजनीति कूटनीति
भेल जेना ओरिका।

सभटा मलाय खाएत
नितौ मुटाइत अछि
खुरचन आ छोलनीसँ
छिलाएत कोना सभटा
छिलैत अछि...।

बकरी दुहैत छै
पाठी मेमियाइ छै
अपन अपन पठरू लेल
औना रहल सभटा
छिलैत अछि...।

माइयेक पेटसँ सभ
सीख एलै राजनीति
राजनीति पढ़ुआ सभ
धेने अछि कोन्टा
छिलैत अछि सभ दिन...।

हे जगत गुरु जन
खोंटि कऽ एको टुक
हमरो जँ दैतिऐ
पढ़ल लिखल राजनीति
घुमि अबितै सभटा।
छिलैत अछि सभ दिन
अत्मा केर छोलिका। ❑

ओझराहैट

करचिक ओझराहैट सन
जिनगिक अछि झंझैट
एकटासँ छुटैत दोसरामे
ओझराइत छी।

देह गेह नेह संग
डूमैत आ थाहैत
करवनहुँ अकाश
खन बसाते उड़ि जाइत छी।
एकटासँ छूटैत दोसरा...।

लोभ मोह सोग केर
महिमोकेँ जानैत
माया केर फाँसमे
तैयो बन्हाइत छी
एकटासँ छूटैत दोसरा...।

जिनगी उड़ि रहल
बनि कऽ ककोहा
तैयो नव खड़ही बनि
जीबैले छटपटाइत छी
एकटासँ छुटैत दोसरामे
ओझराइत छी। ❑

आश विहीन हास विहीन

अगनित काज,एसगर कर्ता
भिनसरसँ साँझ
भूत बनल भिरल छी
बेटी ट्यूशन जेती चलू बुच्ची।

बेटाकेँ बस छुटि रहल छै, एलहुँ
जल्दी नहऊ, नहाए छी।

जल्दी आएब,
छः बजे मीता ओहिठाम।

हम छी पिता
हकासल पियासल
अपन संततिक लेल
नट बनल नाचि रहल छी
आश वहीन हास विहीन! ❑

कुदीन

हमर नगरमे प्रेम रोग केर
सभसँ नीक निदान
झट-दे दुनुकेँ बान्हि कऽ कूटू
निकसै जावत प्राण।

साँझमे आरती भोर पराती
गाबए छल अनुरागी,
दुनु कहुना जान छोड़ा कऽ
भागल संगहि काशी।

रजनी-सजनी केर गेलै जमाना
राग-विराग गरासी
अर्थयुग हाबी भेलए सुदिनपर
कुदिन भेलए अविनासी। ❑

जनमलकेँ नहि समटल

नेहक धार सुखायल मनसँ
कर्मक बाट नहि परखल
आन्हर भेल परिवार समाज बीच
जनमलकेँ नहि समटल।

कामुक बनल किशोर मूर्ख जन
कर्म-कुकर्म नहि परखल
सभसँ दोषी हम अभिभावक
धनक गर्वमे भटकल।
जनमलकेँ...।

एखनहु चेतु आँखिक काजर
बहि ने जाए जे अटकल
अन्त एकर नीक नहि होएत
मन हमर कहै परखल।
जनमलकेँ नहि समटल। ❑

ठनकल फेर ठनका

ठनकल फेर ठनका
हाथ धरू माथपर
बचाउ जुनि अनका।

पथलक चोट खाए
अपने चोटेलहुँ
बरखाक पानिकेँ
आरि काटि बहेलहुँ
पानिमे डूबल लगए
अहु बेरक लगता
हाथ धरू माथपर
ठनकल फेर ठनका।

अपनेसँ सभ छै
अपनाकेँ गछाड़ू
अनका डुबए दियौ
अपनाकेँ सम्हारू,
अपनापर धियान दियौ
छोड़ू ने हुनका
हाथ धरू माथपर
ठनकल फेर ठनका। ❑

विरान

कियो अपन ने आन
हएत संसारो विरान
सभसँ मिल कऽ रही
अपन मनकेँ कही
सभ किछु रहत एतए
भऽ कऽ जाएब विरान। ❑

मन नहि लगैत अछि

मन नहि लगैत अछि
हल्ला धुम धराक बीच
अप्पन कि आन बीच
शीत वात ताप बीच।

सिनेह हीन स्वार्थ बीच
टुटैत सपना आ
देखावटी हुलास बीच।

चतुर्दिक कल्मष
आ अपनहुँ विरान बीच
जोगल सिनेहक
मरैत थकान बीच।

तीत मीठ कटु कोमल
राग ओ विराग बीच
प्राणो कण्ठगत अछि
मर्मक कचोट बीच। ❑

सुमीता

भोरे उठती बारहनिए हाथे
बाल बोध केर चिन्ता
गेएली चुलही पोछैए तँ
दूधक एलनि सुरता।

बौआकेँ स्कूल जेबाक छै
अपनो आपिस जेता
हाँए हाँए कऽ चाय बनौली
बर्तन राखल छिट्टा।

नित दिन हिनकर य्एह अछि जीबन
अपना लेल नहि चिन्ता
पति पुत्र केर सेवा धर्मे
जीली हमर सुमीता। ❑

अनसोंहाँत

देखा देखी जुनि करी बेचि लोक अरु लाज
होटल मोटल जहाँ तहाँ आँठि कूठ भेल भाग।

जगतमे ज्ञानी हम छलहुँ कहैत अछि इतिहास
आजुक पीढ़ी देखि कऽ किनकासँ राखी आश।

सएमे पाँच दस भेटि रहल जनिका अछि किछु धियान
गाम गाममे जाँचि लिअ किनका घर बाँचल मान।

लिखब बाजब बहस करब बिन बाती बिन तेल
टिम टिम डिबिया कहि रहल नहि अछि संगी कोइ।

पुत्र-पिता परिवारमे कैंचा भेल अभिशाप
भाए भाएकेँ गीड़ रहल अपनहिसँ अछि त्रास। ❑

फगुआ

सख सेहन्ते एलि कनिया
फगुआ रंग खेलाएब
भौरेसँ भाँगि पीबि ओ
पटिया पर ओंघराएल।

कहू तँ नीक केला ओ
हमरो द्विर केला ओ।

घरमे पाबैन नहि छैन मतलब
भंगबतहासँ संग
एक्के टाँगे नाचल दुनू
फेर भाँगे भकुआएल।

कहू तँ नीक केला ओ
हमरो द्विर केला ओ। ❑

फागुन

रस बरसए हो रस बरसए हो रस बरसए
फगुआमे बलम घर आएल हो रस बरसए।

संगमे लौलनि नब नब साड़ी
लाल पियर बिच झलकै किनारी
नब नब रीत रचै बालम रस बरसए
फगुआमे बलम...।

सरिपहुँ फाग मन भावन लागए
आइ भवन मनभावन लागए
मनक मनोरथ पूरल हो
रस बरसए।
फगुआमे बलम घर आएल हो रस बरसए। ❑

मनोरथ

सभ दिन बीतल जिनका संगे
ओ सभ कोसो दूर बसैथ
मन रहितो हम पहँच ने पाबी
मनमे बलू नजीक रहैथ।

ओ दिन आब फेर घूरि ने औतै
नेहक फाँस अछि कूहि रहल
जे जतए छी चाहैत छी औहिना
क्यो कतबो बलु दूर रहथि। ❑

वेलेनटाईनक बात

जेहने तोँ छैँ तेहने सेंए छौ
दुनू छैँ बुड़बक,
सभ कोइ वेलेनटाईन मनेलकै
तोँ रहलेँ अलबट्ट।

एकटा कोढ़ही तोड़ि कऽ लऽ आन
साँएक दहिन हाथ,
कहिहैन हेप्पी वेलेनटाईनजी
बुझलहिन खह्कट्ट। ❑

बसंत

आबए बसंत गाबए बसंत
मन मधुकरकेँ फुसलाबए बसंत
अलिकुल उड़ैत गाबैत बसंत
टिकुलिक पाँखिपर उड़ैत बसंत
आबए बसंत...।

आमक पल्लव लागल बसंत
मधुमाछिक मन उड़बैत बसंत
सरिसबक हँसैत पियर पियर
फूलोक संग हिलसैत बसंत
आबए बसंत...।

हर्षित बसंत पुलकित बसंत
पल्लव पल्लव मंजरित बसंत
हरियर-पियर धरणी जननी
सबके मनमे सिहकैत बसंत
आबए बसंत गाबए बसंत। ❑

बसंती भोर

बसंती भोर
सिहकैत ठोर
गाबैत अछि
नाचैत अछि
ता धिन्ना
ता धिन्ना
धिन्न धिन्ना
मनक मोर। ❑

कर्मक बाट

चल रे मनुआँ कर्मक बाट
कर्म बिना किछु मिलए ने जगमे
कर्मे बिकतए जगकेर हाट।

सुरुजो चान नित्तहुँ उगए
बाट बटोही तहिना
हमहूँ किएक ने पकड़ी बाट।
चल रे मनुऑ...।

रोग बियादि नित्त लगले रहतए
झगड़ो-झंझट लगले रहतै
हम किएक बैठब बिन काज।
चल रे मनुऑ...।

कर्मेसँ संसार चलै छै
चुट्टी पिपरी जीवो-जन्तू
सभ चलै छै करमे बाट
चल रे मनुऑ कर्मक बाट...। ❑

बिसबास

शरम भरमसँ जीबि ली
कलयुग अछि अतिकाल

बिना केने किछु
मिलत की
केने भेटत तत्तकाल।

खूब गुलछर्ड़ा उड़ा लेलहुँ
जा छल तनमे शक्ति,
तीन पनक आब
अन्त अछि
करबाक अछि आब भक्ति।

हम छी प्रेमी प्रेम केर
प्रेम बिना सभ सून
टाका कैंचा की करब
ऑखि लेब जब मुइन।

करजा लऽ कऽ नहि मरी
मनमे अछि अभिलाष।
पाँच लोक मिलि जारि देत
अछि एतबा बिसवास। ❑

थकावैट

रतुका जागल नीनक मातल
एखनहु भासैत देह
नव वर्षमे नव-नव चिन्तन
नव-नव देखल भेष।

राजनीति केर कपट कोरमे
क्यो नहि रहता चैन
के अछि गुरु के अछि चेला
किनको अछि नहि मानि।

बहुत कठिन अछि लंगर झंगर
झुझुआएल अछि मऽन
बात करब आब नहि अछि सम्भव
थाकि गेल सभ तन। ❑

गुलाब

लाल-पियर देह संग मनमे उमंग छौ
वाह रे गुलाब तोहर केहन सुगंध छौ।

काँटसँ देह भरल तैयो हँसैत छेँ
केहन छौ मन सुन्नर सभ कियो चाहैत छौ।
वाह रे...।

हावाक संग संग झूमैत रह अहिना
शीत रौद वात घाम तोरा लेल एक छौ।
वाह रे...।

तोरा सन मन धन केकरा मिलैत छै
तोरा तँ देख देख दुनियाँ ललैत छौ।
वाह रे...।

अहिना तँ मनुषोक जिनगी मिलैत छै
सुख दुखक पाटमे सभ ओझराएल छौ
वाह रे गुलाब तोहर केहन सुगंध छौ। ❑

अपन

चिन्हल रेह
अप्पन गेह
सिनेहक मेह
घुप अन्हरियोमे
भेटिये जाइत छैक। ❑

अगहन पूष

करवनहुँ अगहन करवनहु पूष
भेल नेवान फेर भेल पुषौंठ
करवनहुँ चूड़ा गूड़ विशेष
करवनहूँ बगिया लाई सनेस
मन हुए तँ पबितो जाउ
नहि तँ दिनक दिन
जलखै खाउ। ❑

जुआनिक बोखार

साँझ भेल ओझल भेल
जहादोक मस्तूल
संगहि छै डुमए लेल
सुरजो अन्हारमे,
सभ किछ डुमि जेतै
साँझक विलासमे
जेना जाइ छै डुमि सभ किछु
जुआनिक बोखारमे। ❑

भोग

हम जे भोगि रहल छी
ओकरे भाखि रहल छी
फाग दियारी ओ अगहन केर
कातिक सन हम काटि रहल छी
जिनगीक सभ मनोरथ
नोरक तरे आँकि रहल छी। ❑

जाड़

सौंसे दिन अगियासि ये बीतल रातिक कोन ठिकाना
कम्मर तोसकसँ तँ नीक छल नारे-पुआर बिछाना
कहुना कऽ जारसँ बाँची टोपीसँ नीक छल गाँती।

मनक मन जरना नित जड़ए तैयो जाड़ नहि मानए
कतबो देहपर कपड़ा लादी तैयो जाड़ नहि भागए
कोना क जाड़सँ बाँची टोपीसँ नीक छल गाँती।

गाए महींस थैरपर काँपय गुदरा कम्मर ओढ़ने
गाछपर चिड़ए विकालक मारल देऽह लोल सटौने
सबहक चिन्ता भारी टोपीसँ नीक छल गाँती। ❑

कनकनी

छुटै छै बोखार सबहक
किछ नहि फुरैत छै
दिनोमे छै राति जकाँ
कन कनी बढ़ले जै छै।
छुटै छै...।

बूढ़ बच्चा खेन्हरामे
तैयो कँप कँपैत छै
मालजालक कोना के कहत
केहेन ओकर हाल छै।
छुटै छै...।

घरसँ बाहर सगरे
तन मन कँपैत छै
हेतए अनर्थ एहि बेर
तेहने आब बुझैत छै।

छुटै छै बोखार सबहक
किछु नै फुरैत छै। ❑

रिजल्ट

नाच गान आ शान सपटहि
बाबू सभ मशगूल
पढै लिखैमे लालबुझकर
छोड़लक सभ इस्कूल।

छोड़लक सभ इस्कूल
ने जानै पोथियोकेर ओ नाम
तीन तीन बेर परीक्षा देलक
भेटय ने रिजल्टमे नाम।

भेटय ने रिजल्टमे नाम
मस्टरबा सभ एक्के छै
कोनो बिषयमे नम्बर
दस से ऊपर नै छै। ❑

जिनगीक झमेला

जिनगीक मेला आब खेला लगैत अछि
आगि कि पानि हो झमेला लगैत अछि।
किनका की कही किनका लग बैठी
काम निष्काम बेकामे लगैत अछि
जिनगीक....।

जड़ैत छै पुआर तँ लपकै छै धधरा
मन जखन जड़ै तँ देह जाएछै पझहा
नोरक ठेकान कोन कखन पघैल जाए
देह मन दुनु आब बेकाबू लगैत अछि।
जिनगीक....।

पढ़लहुँ जे गुनलहुँ अछि एखनहुँ सहोदर
भाइये बहिन सन नेहगर आ पोरगर
ओकरे बदोलैत जिनगी खेपाइत अछि
ऊँच नीच टेढ़ -मेढ़ एक्के लगैत अछि
जिनगीक....। ❑

गाम छूटल

फेर आइ गाम छूटल।
नैत छल नातिन छल
सुग्गा सन मेना सन
बेटी छल बेटा छल
आँगन बनल कचबचिया मचान छल
आइ ओ बथान छुटल
फेर आइ गाम छूटल।

नार पुआर संग
गोरहा गोरहन्नी
मोट पातर ठाढिसँ
घूरा बना कऽ
हँसैत खेलाइत छलहुँ
सभ किछ आइ छूटल
फेर आइ गाम छूटल।

जाड़ संग ठार्हो छलै
रोटी संग सागो छलै
मारा संग मरूआ रोटी
दूध संग छाल्ही छलै
चलैत खन नैत नातिन संग
नोरक टघार छूटल
फेर आइ गाम छूटल। ❑

छितिर-बितिर

कन कन मन संग
घुमलहुँ सगरो
कन कनाइत छल देह
मन नहि मानय तैयो
घुमि घुमि
आबी पुरने गेह
मन अपचंक रहै अछि सदिखन
केतए हेराएल नेह।

सभ दिन सभ केर
मन पुरेलहुँ
बनि-बनि अदराक मेघ
अन्त समय आब
आसिनक मेघ सन
छितिर-बितिर भेल गेह। ❑

जातिक छाऊर

छौरक ढेरीमे
तकैत रहलहुँ
अपन आदर
सनमान
ई जनैत कहाँ छेलिऐ
छाऊर छाऊरे रहैत छै।
पानि सुखिते उड़ए लगै छै।
कतबो जल किएक ने छिटल जाय।

आखिर ई जातिक छाउर
कतेक दिन
अहिना उड़िया-उड़िया
सभ किछु झाँपैत रहतइ! ❑

ईहो तँ जिनगीए छै

जखन देखैत छी
जिनगीक ओल झोल
मोल तोल ऊँच नीच
अपनकेँ आन सन
आनकेँ समांग सन
अपनेमे टेंढ़
लाख दू लाखपर
छाँटैत बड़प्पन
तँ देख देख करवनो
हँसैत समाज बीच
कहुना जीबि लैत छी
अपनेमे सन्हियाइत
ईहो तँ जीनगीए छै। ❑

गामक बात

ई मौसम अछि कतेक नीक
धात्री फरल बैगन फरल
आलू उखरब अछि नजीक
कुरथी दालिक पुछू ने बात
अपना गामक राखी आश
की कहू अपन गामक बात।

बथुआ संग खेसारी साग
मटर पालक भेल भकरार
धनिया आ धात्री केर चटनी
नबका चौरक मीठगर भात
की कहूँ अपन गामक बात।

डिल्ली बम्बई बड़का नगर
अपना गामक सुटकल डगर
बड़का नगर आब धरऽ दौड़ए
अपने गामक राखि आश
की कहूँ अपन गामक बात

कोबी-मूड़-मटर केर छिम्मी
खेत-खेतमे हँसैत गुम्मी
कन-कन सागक संग सोहनगर
लागए केहन सुन्नर गात
की कहूँ अपन गामक बात। ❑

बौआइत

मनुज हृदयक गहन गहवरमे
आर्त क्रन्दनक स्वर भरल अछि
मनुज मनुजकेँ दुतकारैए सदिखन
दस्युकेँ अभिनन्दन करैत अछि।
मनुऑ किए बौआइत रहैत अछि।

अगम अछि ई सृष्टिक रचना
दिनकर तँ उगिते रहतइ
किन्तु ई निश्चित हुनका संगे
नित अन्हारो संगे रहैत अछि।
मनुआँ...।

जँ इजोरियाक संग पुर्णिमा
तँ अन्हरिया संग अमावस्या
जनमसँ जिनगी जौं जुड़ल तँ
मृत्यु कहाँ फराक रहैत अछि।
मनुआँ...।

जग संगे जन-जन अछि जुड़ल
नेहक भूखल जग टौआइत अछि

अपन आन आ जाति-पाति संग
मनुआँ किए बौआइत रहैत अछि।
मनुऑ किए बौआइत रहैत अछि। ❑

झूठ

झूठक ओढ़ना झूठेक बिछौना
खेनाए पीनए झुठ्ठे,
झूठक सभतैर हाट लागल छै
ऑखियो भऽ गेल झुठ्ठे।

हम छी झूठ झूठ अछि दुनियाँ
काज बेपार अछि झुठ्ठे,
किनको नहि छैन महल अटारी
आँखि मुनैत सभ झुठ्ठे।।

झुठ्ठे सभ उपछै छथि पोखैर
अपसियांत छथि झुठ्ठे,
झूठक हाट साँचो भेल झुठ्ठे
गुरु गोंसांइ सभ झुठ्ठे।।

सत्य करम आ सत्य विचार बिनु
जिनगी सबहक झुठ्ठे,
अपन करम अपने सभ भोगब
नहि हमर बात ई झुठ्ठे। ❑

भातक थारी

गमकि रहल गामक फुलवारी
मेघक कृपा रहल शुभकारी।

चननचूर तुलसीफूल गमकए
धानक एहिबेर भरल बखारी।

रोम रोम सुख पाबि रहल छै
भूख सुतत एहिबेर गोरथारी।

गाम दलान सुहावन शुभकर
सबहक आगू भातक थारी।

उसना भात साग बथुआ केर
अल्लुक चोखा अछि सुखकारी।

लाल चटनी धनिया केर पत्ता
खाइत रहू भरि भरि सभ थारी। ❑

मधुर प्रात

जागू हे मधुर प्रात।
पुष्पकेँ पराग धएल
मधुकरकेँ करैत याद
फुलैत छए पाबि किरण
सुरुज दऽ रहल धाहि
कण कण स्पंदित छै
पाबि क अहिंक राग।
जागू हे मधुर प्रात। ❑

जुग-पुरुष

जुग पुरुष
बाते नहि
करमे होइत छैक।

गाए चरबऽ बला सभ
किसुनमे नहि भऽ
जाएत छैक
ताहि लेल
गोबरधन सेहो उठबऽ
पड़ैत छैक।

राखऽ परैत छै
गीताक ज्ञान
लड़ऽ पड़ैत छै
गाण्डीवधारी संग
रथवाह बनि
भीष्म द्रोण कृपाचार्य आ अश्वथामा संग
आ वंश बचेबा लेल
जेष्ठ भ्राता कर्ण संग।

मारए पड़ै छै स्वकेँ
एकटा दोसर वंशकेँ बचेबा लेल
नव राष्ट्र केर निर्माण
आर नव धर्मक स्थापना लेल।
शकुनी सन चरित्रकेँ
कुत्तो नहि पुछै छै। ❑

दीप

दीप नेसलहुँ बुच्ची
दीपे सन तँ अहूँ छी
अपनाकेँ जरा कऽ
एहि आँगनमे इजोत कऽ
ओहि आँगन तक
अपनाकेँ जारैत
तन मन ज्योतित करैत रहलहुँ
एहि कुलसँ ओहि कुल तक
आइसँ नहि
अदौ कालसँ..! ❑

मैथिल

नहि आबैत छनि शंख बजाब
घड़ी घन्टोसँ भेँट नै छनि
पूजा पाठ शास्त्र ज्ञान आओर
पूज्य अपुज्यक धियान नहि छनि।
मैथिल ओ मिथिला केर जिनका
रतियो भरि परवाह ने छनि
मिथिला केर मैथिल ओ कहावैथ
अपनो कूलक मान नहि छनि। ❑

छोटकी-बड़की

छोटकी जँ बड अगराए
बूझू बाबू छथि पौगराएत।
बड़की सभ दिन चुलही निपए
छोटकी पान तमाखू खाय
हर बरदकेँ करए चाकरी
पनपियाए लऽ खेतो जाय
जो गए बड़की नेना कानउ
छोटकी नित्य सिनेमा जाए
मायक ममता देल हेराए।

आइ जेठकी केर बेटा बनि कऽ
सरिपहुँ लिलसा देलक पुराए
अपन माय बेमातर भेलए
बेमातर भेलए अपन माय
जनम जे देलकए गाम ओगरने
बड़की बेटा पाबि मुस्काय। ❑

घाघस

अथवल सोंच चलय गुड़कुनियाँ
देखनहुँ देखए ने देह
झूठहि मेघ देखावए घाघस
ओहिना करए ओ खेल।
बात करममे मेल कतहु नहि
करए घिनौना मेल
स्वार्थक पाछू अछि बताह ओ
कोना रहत कहु मेल। ❑

परम्परा

तिमिराच्छादित सकल शुभ चिंतन
डेग डेग गति रोधक
घटाटोप कज्जल बिच करवनहु
कोना मिलत शुभ शोधक
बाट घाट सभ अछि सकबेधल
परम्पराकेँ बोधक
हमहूँ परम्पराकेँ गछारल
ऊँच नीच बिच गोलक।
सभ दिन अहिना मिथिला रहलै
अपन बीच विष घोलक
अपन अपन सभ
पीठ ठोकैत जाऊ
भविष ने किनको छोड़त। ❑

राग

सुर बिनु राग रूप बिनु रचना
सकल पदारथ अछि कुरचना।
यामिनी गंधा फुलएल भकरार
गमगम गमकय बारिक अँगना।
चम्पा गुलाब फुलल फुलबारी
नाचए वृंतपर पाबि सुरचना।
मैथिल भाषाक सरस सुभाव
तें संसारक बनल अछि गहना।
रागमे बान्हल सोहर समदाऊन
सुख दुख वर्णित मैथिल बयना। ❑

विद्याक अर्थी

तोरा मनमे की बुझैत छः तूँहींटा भेलह विद्वान
तोरा सन त धान कटै छै जुनि देखावह शान।

शाने मिथिला शाने मैथिल सभकेँ खेलकऽ ई अभिमान
गेलह अल्हुआ सुथनी सेहो गेलह मरूआ-माछ-मखान।

गामे गाम एलह गुरुजी एक पति पाया सन
धिया पुता बौआइत छऽ दुधकट्टू पिल्ला सन।

कने जँ बढ़लऽ शुरु भऽ गेलैह गुटखा खैनी पान
गामे गाम दलाली ढुकलह एकरे छः अभिमान।

एखनहुँ तँ बच्चापर राखह अपन चौकस धियान
नहि तँ बाबू पहुँचा देतह विद्याकेँ अर्थी मशान। ❑

हर्षित फुलकित प्राण

आइ खटराकेँ मन झुमै छै
झुकि झुकि काटय धान छै
संगमे छै नव कनिया सहो
हर्षित पुलकित प्राण छै।

करवनहुँ कनडेरिये ऑखिए
दुनु ताकए एम्हर ओम्हर
जखन नजैरसँ नजैर मिलै छै
ठोरे ठोर मुस्कान छै।
हर्षित पुलकित प्राण छै।

गिरहतवा जँ अढ़मे रहितै
मुहाँ-मुहीं गप्प होइतै
सासुरमे नव कनिया एलै
केहन भाग दियमान छै।
हर्षित पुलकित...।

अल्ता लागल पैरमे पायल
तेलमे साड़ी भीजल माथ
माथक मंगटिक्कापर सुरुज
सेहो केहन द्युतिमान छै।
हर्षित पुलकित...।

जीबह बाबू जीबू कनिया
तोरेसँ खेत खरिहान छै
हमर बेगरता तोहर जिनगी
तोरेसँ हमरहु मान छै।
हर्षित पुलकित...।

घान छोपि दुआरपर एलए
नवकी कनियाँ बोझ नेने
नव दुआर बोझ कतए रखेतै
असमंजसमे ठाढ़ छै।
हर्षित पुलकित...।

गिरहतनीक बेटी देखलक
नव कनियाकेँ दुआरपर
घोघ उघारि पहिने ओ देखल
देखिते मन अकाश छै।
हर्षित पुलकित...।

हाथ पकड़ि नव ननैद बैसौलक
छोटका मँह बिधुऔने छै
गिरहतनीक ठोरक मुस्की
कनियाकेँ सोहराबै छै।
आइ खटराकेँ मन झुमै छै।
हर्षित पुलकित प्राण छै। ❑

गाछ

कहाँ तकै छै कोनो गाछ
छत्ता छड़ी तुड़ए आ कि
कोनो घोघही
ओ दोसरा लेल सभ किछ
बनि पोषैत छै पालै छै
बोधैत छै सभ क्षण
सभ दिन जिनगी भरि
कहाँ मंगैत छै वरदान
सम्मान ऊँचासन।
ओ लुटबै छै
अपन फूल फल
सुगन्ध
मंगितो हेतए किछ तँ
साइत सिनेह। ❑

गाए आ गंगा

गाए आ गंगा
अनन्त कालसँ
जीबि रहल छथि
पोषि रहल छथि
मानव संततिकेँ
अपन दुग्ध आ अमृत सन नीर सँ
हम बदलामे दैत छिऐन
पुत्र शोक मृत्यु चोट
अपन अवशिष्ट
वाह हम हुनक
कतेक श्रेष्ठ बुद्धियार संतान छिऐन। ❑

मनक बात

अपना मने खूब नचै छथि
अनको नीक लगैछैन की
ई सोचबाक पलखैत किनका छनि
अपनहि जान गमौता ई।

बुड़बक बेटा रुपैये काबिल
ई कहबी कोनो झुठ्ठे छै
कबिलाहा जब दंड घिचै छथि
बुड़िबकहाकेँ कहबै की।

भेटलै नोकरी पानो दाइकेँ
फुल कुम्मैर सभ बैठले छै
कतबो लुत्ती कोइ लगौलकै
पानोकेँ किछ भेलए की।

वाह बहादुर लेलकैन एहिबेर
पायक पोटरी खोलि सुकाज
सुकर्मा सभ देखिते रहि गेल
आबो नीति बदलतै की। ❑

पुम्ही

चोंचामे झूलैत प्राणक
जिनगी कोन!
करवन कोन
बनराएल हाथ
बढ़तै आ
नोइच फेकि देतइ
अंखुएत जिनगीक
पुम्हीकेँ। ❑

खेतिहर

बरखै मेघ कि बरखै आगि
खेतिहर लेल अछि एके बात
जाड़ हाड़कैं कँपबै तैयो
खेतक आरिपर काटय राति।
मोटका रोटी मोटके भात
मोटका नुआँ कारी गात
बिन पनहीकैं फटल बेमाए
धरणी पूजए दिन ओ राति।
धरती माय सुरुज छै बाप
ओकरे आशीषे जीबै आश
पर धन लोभ करै नहि कहियो
ईश गुहारे होइतहिं प्रात। ❑

मृदुल थाप

अपमानित अवहेलित
कुण्ठा केर गलल राति
बन्द छल मृदुल थाप।

सुरभित स्पन्दित
ज्योति राशि भरल प्रात
चपल गात
दैत अछि मृदुल थाप। ❑

डौंस बहुत

लजबिज्जी केर लाज बहुत
करमजरूआकेँ काज बहुत।

बतबल्लर लग बात बहुत
चोर बंगोरकेँ लाथ बहुत।

नगरक लोककेँ नाम बहुत
गामक लोककेँ शान बहुत।

जिनका नाथ ने पगहा कहियो
सबकेँ पहिराबैथ नाथ बहुत।

जाहि गाछ तर फलक आशा
चुट्टी पिपरी डौंस बहुत। ❑

अतमा बैमान छै

नेह जकर जिनगीक
पहिल पैदान छै
नेह बिनु जेकरा लेल
दुनियाँ विरान छै
पाय लऽ तौलै छै
बेटीकेँ ई दुनियाँ
माय बापक आइयो
अतमा बैमान छै। ❑

हेहरा

युग युगसँ प्रतारित जन सभ
माँगत जखन हिसाब
कर्म -कुकर्मक सोझा किनको
मुहसँ ने निकलत भाफ।

अपन अदौरी सबसँ नीमन
अनकर बऽड़ी फिक्का
अपन सड़ल दही अछि मिठगर
दोसराक टटका खट्टा।

नीति अनीतक चालि-चलैनसँ
बुझि रहल संसार
झारखंड बनलासँ की
अदिवासी भेल नेहाल।

आगि कतेक दिन झांपल रहतै
जरत नीति अनीत
सुन्नर वस्त्रसँ झांपल निरघिन
कर्मे मरब निश्चित।

हेहराकेँ जँ लाज भऽ जाय तँ
थेथरा कोना जनमत
जो रे हेहरा! कहि कऽ आब कोइ
हेहरोकेँ नहि छोड़त। ❑

बाबाक गाम

किछ दिनक बाद साँचो
बाल बच्चाकेँ कहऽ पड़तै
बाबाक एकटा गाम रहनि।

हमर गामक चौहद्दीमे
साँझसँ राति आ
रातिसँ भोर
पुनः भोरसँ राति होइत रहल।

आँगन, दुआरसँ निकैल
जौं जौं आगू बढैत गेलहुँ
गाँमक गली-कुचीसँ
बाध बोन तक
कखनहुँ अपन तँ
कखनहुँ आन बिरान
होइत रहल।

गामक लोक
गामक स्त्री
गामक पुरुख
गामक किशोर

गामक किशोरी
नीक -बेजए
नव घर उठैत
आ पुरान घर खसैत देखि
झमैत तँ कखनहुँ मुदित होइत रहल।

मनक बस्तीमे
कोन-कोन रूप उजरैत
आ बनैत रहैत छैक नहि जानि
कतेक बस्ती मनक कोन्हीमे
समाहित रहैत छैक।

साँचो मनुष
मनसँ गामकेँ निकालि
बिरान भऽ जेतए
की ई सम्भव छैक?
मनसँ अपन डीहकेँ निकालि
मैथिल जीबि सकैत अछि?

अपन डीह बेचि हम
जे नवका डीह बना रहल छी ताहि संग हमर
मनक बसती
जीबित रहि सकैत अछि?
की काल्हि हमर गाम
बाबाक एकटा गाम
भऽ कऽ रहि जेतइ। ❑

मनक गगन

मनक गगन लोभे मगन
सदिखन मायाक मेघ सघन।

मनक मयूर नाचि रहल
लोभक दादुर गाबि रहल
तऽ तऽ थै तऽ तऽ थै
टर टों टर टों टर टों। ❑

नोर

गाम लगए मन्हुएल मनुषसन
जिनगी गेल कुम्हलाए
करवनहु पावस करवनहु शिशिरसम
बसन्त कतहु ने लखाए।

जरए ने करवनहुँ प्रेमकेर बाती
साँझ हो या भिनसार
सबहक देह, प्राण व्यथित देखि
आकुल मन नोराए। ❑

सुरभित आनन

सुरभित आनन नयन अरविन्दा
ब्रह्मा बनाओल रुचिर सानन्दा।

शुक सम नासिका कमल कपोलऽ
दारिम दंत हास जिमि चन्दा।

यामिनी रंग कुन्तल छुबै धरणी
सहज हुलास विलास आनन्दा।

मथित सागर जिमि मथय दुहु नैना
सोन कलश भेल मुदित मकरन्दा।

शिव सभ लेखल कएल मति संगा
नयन सराहल देखि सुख चन्दा। ❑

संतोष

सदिखन मन उचाट रहैत छनि
गुण धुन करैत छनि मऽन
अरवा उसना किछु ने बुझैत छनि
सदिखन ताकैथ धऽन।

नीक कहए वा कोइ कहै अधलाह
रखैथ ने कखनो कान
एक आस बिसबास पाय छनि
की लअ हेतैक सनोमान।

छनि नहि कमी कैंचा-कौड़ीकेँ
महल अटारी चमकैन
एक मंजिलासँ दुइ मंजिला धरि
कोनो ने भंगठा एलैन।

कित्ताक कित्ता जर जमीन छनि
तैयो ने छनि संतोष
महल अटारी केकरा संग जेतइ
आबो तँ धरु संतोष। ❑

तमसो मा ज्योर्तिगमय

जरलै दीप अकाश विरल भेल तमक सघनता
भुक भुक करै प्रकाश भगजोगनी लगै सेहन्ता
दुआरक डिबिया बारि करी नित ज्योतिर्तम हम
मिटए न अंधविश्वास घटए नहि एकर गहनता।

माला कण्ठी ठोप त्रिपुंड धए भेल अभिमानी
करै कुसंगत काज सुनाबै निषिध कहानी
तमसो मा ज्योतिर्गमय केर पाठ पढाबए
अपने खसए अन्हार संग औरोकेँ खसाबए। ❑

अवस्था

दहो दिश आगि जरए पथ जीवन
चलल पथिक हिय हारि
बाल किशोर युवा संग जीवन
किछु दिन रहल दिया वारि
आएल प्रौढ़ पाछु वृद्धावस्था
सकल मनोरथ जारि
अपन आन केर थाह ने लागए
सुधि बुद्धि गेल बिसराए। ❑

चोरबा सभकिछु लऽ गेल

भरि गाम भऽ गेल शोर
चोरबा सभकिछु लऽ गेल
छल-मे-छल एक मोह
मनसँ सेहो मेटि गेल
भरि गाम भऽ गेल शोर...।

केलनि सेहन्ता पूर
विधाता बुझलनि दु:खकेँ
कानैत-कहरैत शोक-सेहन्ता
सभटा मेटि गेल
भरि गाम भऽ...।

अनलैन गौंऑ बाँस-काठ
सभ टाटी बन्हलैन
भेल अन्तिम प्रस्थान
जगतसँ नाता छुटि गेल।
भरि गाम भऽ...।

करौथ जे करता आब
करम आ श्राद्ध ओ तर्पण
मनुआँ बेपरवाह
जिनगीक झंझट मेटि गेल
भरि गाम भऽ गेल शोर
चोरबा सभ किछु लऽ गेल। ❑

बेगरता

के अछि लुच्चा
के लफंगा
सभ तकै अछि अपनहि अंगा
टुकुर टुकुर सभ लोक तकैए
झूठ फूसि सभ लोक कनए
अपन बेगरते सभ औनाए।

कारी झामर देह जेकर छल
पोखैर झांखैर जे बौआइ छल
ओ मुखिया बनि दुइए बर्खमे
सूति पलंगपर फोंफ कटैए
अपन बेगरते सभ औनाइए।

के केकरापर आशा राखए
सभ कियो नव-नव खेल जे खेलए
धोती कुर्ता केर गेलए जमाना
पैजमे लेल सभ अपसियाँत-ए
अपन बेगरते सभ औनाइए। ❑

सारवी- 1

अहाँक समान अहीं छी बुद्धिगर झूठो भऽ गेल साँच।
एहि दुनियाँमे अहाँ सन के अछि दूधो भऽ गेल छाँछ।।

शिक्षक भेल हाथक झुनझुना बजा बजा सभ खेलए।
बाजत काल्हि वंशक झुनझुना आँखि ने किनको खुलए। ।

जाहि देश और जाहि प्रांतमे शिक्षक हएत कमतिया।
शिक्षा केर श्मशान बनत ओ जनमऽत मात्र भनसिया।।

बहुत कठिन छै पिपही पोषि कऽ आमक गाछ बनायब।
मालिसँ जँ बकरी चरबाएब आमक फल कोना पायब।।

मुहसँ बाँची मधुर मधुर करमकेँ ने राखी धियान।
कोना क क्यो आदर करत टाका जँ हएत महान।। ❑

सारवी- 2

चलू चली जतए ने नीनक सेन्हमारी छै।
जतए ने जातिक सदिखन महामारी छै।।

मनमे किछु शब्दमे किछु करम किछ आरो छै।
प्रेमकेर रागपर सदैत समाज चलबैत आरी छै।।

सुदिन की छै कुदिन की छै केकरो नहि भान छैक।
कखन केकरा कतए बेधत नुकाएल कटारी छैक।।

जखन मनेकेँ बात तखन ऊखरि की जाँत।
सभ देलक उखारि आब पुरना गेल ई बात।।

जखन जे भेल बाजि क मनेमन पगुराए।
एहन सलोना रूपपर कोना कियो रितिएत।। ❑

साखी- 3

किएक गैसेकेँ पेट किए पेटेकेँ गैस।
केओ सपने बौआए केयो पोषै ई गैस।।

सभ अपने कमाल चाहे हाकिम कलाल।
सभ गैसेमे घुमय अपन लऽ कऽ दलाल।।

सागरे मंथने अमृत निकषै सागरे मंथने विष।
सागरेसँ मोती निकषै सागरेमे सबहक ईश।।

सभ किछु कालक हाथ छै काले सभकेँ नचाबै।
काले सभकेँ संगे चलै काले सभकेँ हँसाबै।।

❑ ❑ ❑